International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 14 Issue 01, January 2024,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अलवर एवं भरतपुर जिलों में नगरीय जनसंख्या का बड़े नगरों में संकेन्द्रण 1961–2011 (एक भौगोलिक अध्ययन)

साहस यादव
शोधार्थी
राज ऋषि भर्तृहरि
मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

सारांश

अलवर एवं भरतपुर दोनों जिलों में बड़े नगरों में जनसंख्या संकेन्द्रण की भिन्न–भिन्न स्थितियाँ रही हैं। 1961 से 2011 के मध्य अलवर जिले में 61 प्रतिशत से 83 प्रतिशत जनसंख्या का संकेन्द्रण बड़े नगरों में था जबकि भरतपुर जिले में इस अवधि में बड़े नगरों में नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण 31 प्रतिशत से 51 प्रतिशत के मध्य रहा। अलवर जिले में 1961 में एक भी नगर एक लाख या अधिक जनसंख्या वाला नहीं था जबकि 2011 में दो नगर (अलवर एवं भिवाड़ी) एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले थे। भरतपुर जिले में 1981 से पूर्व एक भी नगर एक लाख या अधिक जनसंख्या वाला नहीं था। 1981 से 2011 तक अकेले भरतपुर नगर की जनसंख्या एक लाख से ऊपर थी।

अलवर जिले में संकेन्द्रण सूचकांक जनगणना वर्ष 1961 से 2011 तक 61.20 प्रतिशत से 82.72 प्रतिशत के मध्य था जबकि भरतपुर जिले में 31.71 प्रतिशत से 51.07 प्रतिशत के बीच। स्पष्ट है अलवर जिले में बड़े नगरों में जनसंख्या का जमाव बहुत अधिक है छोटे नगरों का विकास कम हुआ है जबकि भरतपुर जिले में बड़े नगरों में जनसंख्या संकेन्द्रण अलवर जिले से काफी कम है। भरतपुर जिले में सबसे बड़े नगर भरतपुर के साथ अन्य नगरों में भी जनसंख्या जमाव ठीक स्थिति में हुआ है।

मुख्य शब्द :जनसंख्या संकेन्द्रण, जनगणना वर्ष, सेन्सस हैण्ड बुक, नगरीय जनसंख्या, प्रशासनिक कारक, औद्योगिक कारक, सांविधिक नगर, जनगणना नगर।

प्रस्तावना

वितरण की संकल्पना भूगोल की मूलभूत संकल्पना है। भूगोल को स्वतंत्र विषय के रूप में पहचान दिलवाने में इसकी महती भूमिका रही है। भूगोल विषय के अन्तर्गत पृथ्वीतल पर पाये जाने वाले भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्त्वों के वितरण का अध्ययन प्रमुखता से किया जाता है। इसी कारण भूगोल को वितरण का विज्ञान भी कहा जाता है।

नगरीय भूगोल में नगरों का वितरण प्रतिरूप, नगरीय जनसंख्या के वितरण का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। किसी क्षेत्र विशेष के नगरों में जनसंख्या का वितरण किस प्रकार का है यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अध्ययन बिन्दु है।

कहीं बड़े नगरों में जनसंख्या का संकेन्द्रण अत्यधिक मिलता है तो कहीं छोटे नगरों में नगरीय जनसंख्या अधिक पाई जातीी है। जनंसख्या का जमाव उन नगरों द्वारा आस–पास के क्षेत्र को दी जाने वाली सेवाओं की प्रकृति, उनके स्तर व उनकी संख्या पर निर्भर करती है।

प्रस्तुत अध्ययन में अलवर एवं भरतपुर जिलों में बड़े नगरों में नगरीय जनसंख्या के संकेन्द्रण का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय :

मानचित्र 1

अध्ययन क्षेत्र :अवस्थिति मानचित्र

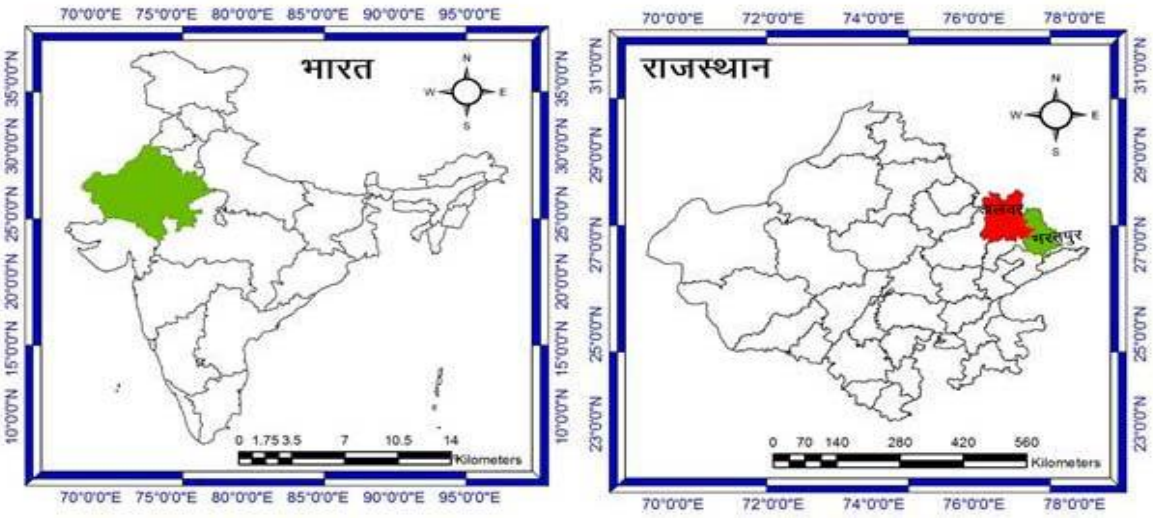

अलवर एवं भरतपुर जिले राजस्थान राज्य के पूर्वी भाग में स्थित महत्त्वपूर्ण सीमावर्ती जिले हैं जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र का हिस्सा हैं। अलवर जिला 27^0 4′ उत्तरी अक्षांश से 28^0 4′ उत्तरी अक्षांश एवं 76^0 7′ पूर्वी देशान्तर से 77^0 13′ पूर्वी देशान्तर के मध्य 8380 वर्ग किलोमीटर में फैला है। इस जिले की सीमाएं हरियाणा के तीन जिलों से महेन्द्रगढ़ (पश्चिम) रेवाड़ी (उत्तर) एवं मेवात (उत्तर–पूर्व) मिलती हैं। पूर्व एवं दक्षिण–पूर्व में भरतपुर जिला, दक्षिण में दौसा जिला एवं पश्चिम में जयपुर जिला (राजस्थान) इसके सीमावर्ती जिले हैं। जिले में पहाड़ी एवं मैदानी भू–भाग प्रमुखता से पाये जाते हैं। उप–आर्द्र किस्म की जलवायु वाले इस जिले की वार्षिक वर्षा का औसत 65 सेण्टीमीटर है। यहाँ ग्रीष्मकाल एवं शीतकाल दोनों कठोरता लिए होते हैं। ग्रीष्मकाल में उच्चतम तापमान कई बार मई–जून में 47^0 सेण्टीग्रेड को पार कर जाते है तो शीतकाल में न्यूनतम तापमान 2^0 सेण्टीग्रेड से नीचे भी अनेक स्थानों पर गिर जाता है। वर्षा का 80 प्रतिशत से अधिक भाग जुलाई से मध्य सितम्बर के बीच दक्षिणी–पश्चिमी मानसून से प्राप्त होता है। साक्षेप आर्द्रता का औसत 50 प्रतिशत के आसपास पाया जाता है।

भरतपुर जिला $26^0$22′ उत्तरी अक्षांश से 27^0 50′ उत्तरी अक्षांश तक तथा 76^0 33′ पूर्वी देशान्तर से $78^0$17′ पूर्वी देशान्तर के बीच विस्तृत है। इस जिले की सीमा पूर्व में उत्तर प्रदेश राज्य के मथुरा एवं आगरा जिलों से मिलती है तो उत्तर में हरियाणा राज्य के मेवात जिले से। इस जिले की पश्चिमी सीमा पर राजस्थान के अलवर एवं दौसा जिले स्थित हैं जबकि इसके दक्षिणी सीमावर्ती जिले धौलपुर एवं करौली (राजस्थान) हैं। जिले का कुल क्षेत्रफल 5066 वर्ग किमी. है। लगभग समतल भू–भाग वाले इस जिले में रूपबास, बयाना तहसीलों में पहाड़ी भू–भाग भी दिखाई देता है। जिले में कोई सदावाहिनी नदी नहीं बहती है। बरसाती नदियों में बाणगंगा, रूपारेल और गंभीर मुख्य नदियां हैं। जिले की वार्षिक वर्षा का औसत 664 मिमी. है जिसका अधिकांश भाग दक्षिणी–पश्चिमी मानसून से जुलाई से मध्य सितम्बर के बीच प्राप्त होता है। अलवर व भरतपुर दोनों जिलों में दिसम्बर से फरवरी माह में भूमध्यसागरीय चक्रवातों से थोड़ी वर्षा प्राप्त होती है जिसे स्थानीय भाषा में 'मावठ' कहा जाता है। यह वर्षा रबी की फसल के लिए विशेष उपयोगी है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया गया है –

1. अलवर एवं भरतपुर जिलों में बड़े नगरों में जनसंख्या संकेन्द्रण की स्थिति का पता लगाना।
2. दोनों जिलों की नगरीय जनसंख्या संकेन्द्रण की तुलनात्मक स्थिति को जानना।

परिकल्पना

अलवर एवं भरतपुर दोनों जिलों में नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण बड़े नगरों में बहुत अधिक हुआ है।

विधितन्त्र

प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। भारतीय जनगणना की डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैण्ड बुक से आँकड़े एकत्र किये गये हैं। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण गणितीय विधि एवं आरेख द्वारा किया गया है। संकेन्द्रण सूचकांक निकालने के लिए जे.पी. गिब्स द्वारा दिये गये निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया है –

नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण $-\mathrm{CU} = \frac{\mathrm{UPUA}}{\mathrm{TPUA}} \times 100$

CU = नगरीकरण का संकेन्द्रण

UPUA = एक लाख या अधिक जनसंख्या वाले नगरों की कुल जनसंख्या

TPUA = क्षेत्र में रहने वाली कुल नगरीय जनसंख्या

बड़े नगरों में जनसंख्या संकेन्द्रण

किसी क्षेत्र के बड़े नगरों में जनसंख्या के संकेन्द्रण को मापना भी नगरीकरण के अध्ययन के लिए जरूरी है क्योंकि नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत मान किसी क्षेत्र में कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या की मात्रा को तो बतलाता है किन्तु उस जनसंख्या के वास्तविक वितरण की सही स्थिति प्रस्तुत नहीं कर पाता। दो क्षेत्रों में नगरीय जनसंख्या की समान प्रतिशत मात्रा होने के बावजूद एक क्षेत्र में अधिकांश नगरीय जनसंख्या का जमाव बड़े नगरों में हो सकता है तो दूसरे क्षेत्र में नगरीय जनसंख्या का

संकेन्द्रण कुछ नगरों में न होकर अनेक नगरों में बिखरा हुआ हो सकता है, क्षेत्र के नगरों में जनसंख्या वितरण की सही स्थिति जानने के लिए, नगरीय जनसंख्या के संकेन्द्रण की स्थिति जानना जरूरी है। जनसंख्या के संकेन्द्रण का पता लगाने के लिए बहुधा नगरीय संकेन्द्रण सूचकांक, गिनी गुणांक एवं लारेंज वक्र का प्रयोग किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में नगरीय संकेन्द्रण सूचकांक विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के वितरण की स्थिति को समझने में यह विधि मददगार है।

जे.पी. गिब्स ने जनसंख्या के संकेन्द्रण का पता लगाने के लिए एक सूत्र का प्रतिपादन किया। सूत्र को निम्न रूप में प्रयुक्त किया गया है–

$$CU = \frac{UPUA}{TPUA} \times 100$$

यहाँ

CU = नगरीकरण का संकेन्द्रण

UPUA = एक लाख या ज्यादा जनसंख्या वाले नगरों की जनसंख्या का योग

TPUA =क्षेत्र में निवास करने वाली कुल जनसंख्या

इस सूत्र से किसी क्षेत्र के प्रत्येक जनगणना वर्ष में बड़े नगरों में जनसंख्या के संकेन्द्रण की दशा को आसानी से पहचान सकते हैं।

तालिका 1 में अलवर एवं भरतपुर जिलों में 1961 से 2011 के प्रत्येक जनगणना वर्ष की बड़े नगरों (एक लाख जनसंख्या से बड़े आकार वाले नगर) में निवास करने वाली जनसंख्या एवं संकेन्द्रण सूचकांक को दिखाया गया है।

तालिका 1

अलवर एवं भरतपुर जिलों में नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण

जिला	जनसंख्या	1961	1971	1981	1991	2001	2011
अलवर	कुल नगरीय जनसंख्या	87892	126882	196201	320287	434939	654451
	एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों की जनसंख्या का योग	72707*	100378	145795	205086	266203	427489
	एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों की संख्या	—	01	01	01	01	02
	संकेन्द्रण सूचकांक (प्रतिशत में)	**82.72**	**79.11**	**74.30**	**64.03**	**61.20**	**65.32**
भरतपुर	कुल नगरीय जनसंख्या	156968	205095	321700	320803	408960	495099
	एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों की जनसंख्या का योग	49776*	69902*	118058	156880	205235	252838
	एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों की संख्या	—	—	01	01	01	01
	संकेन्द्रण सूचकांक (प्रतिशत में)	**31.71**	**34.08**	**36.70**	**48.90**	**50.18**	**51.07**

स्रोतः डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैण्डबुक 1961–2011, जिला अलवर एवं भरतपुर

*जिले के सर्वाधिक बड़े नगर की जनसंख्या (यद्यपि नगर की जनसंख्या एक लाख से कम है।)

आरेख 1

अलवर जिला : नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण

वर्ष 1961

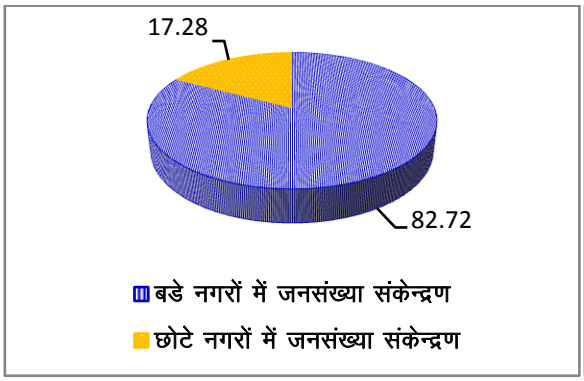

वर्ष 1971

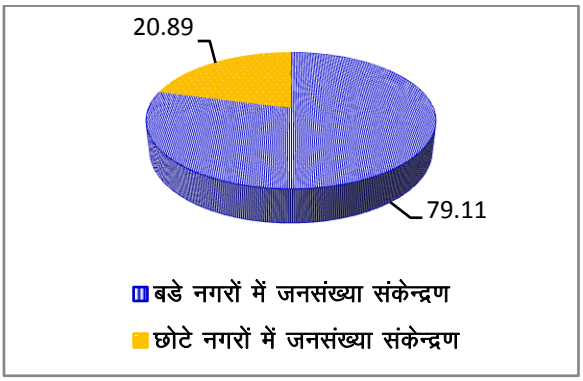

वर्ष 1981

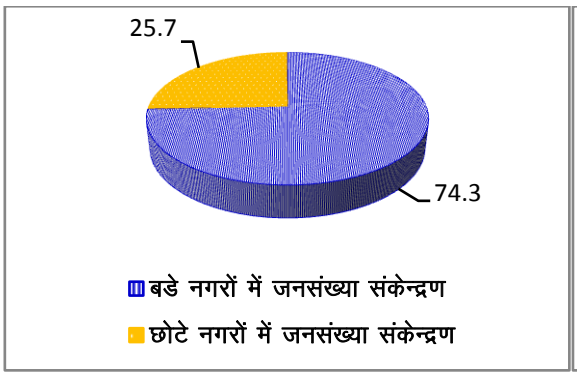

वर्ष 1991

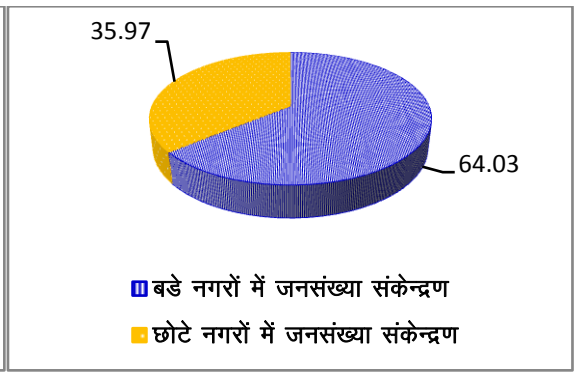

वर्ष 2001

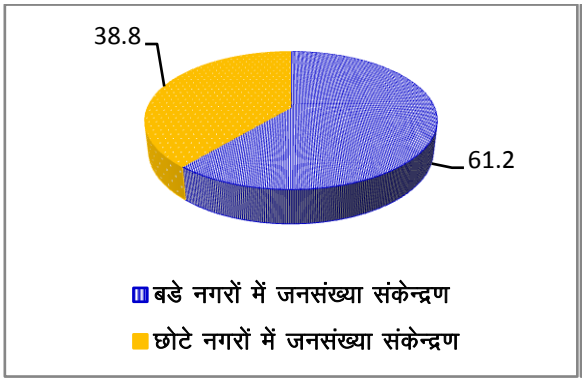

वर्ष 2011

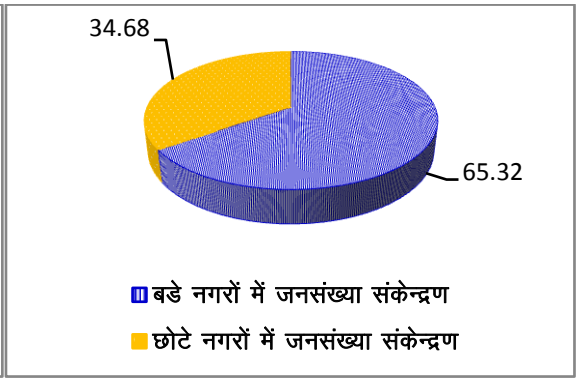

आरेख 2

भरतपुर जिला : नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण

वर्ष 1961

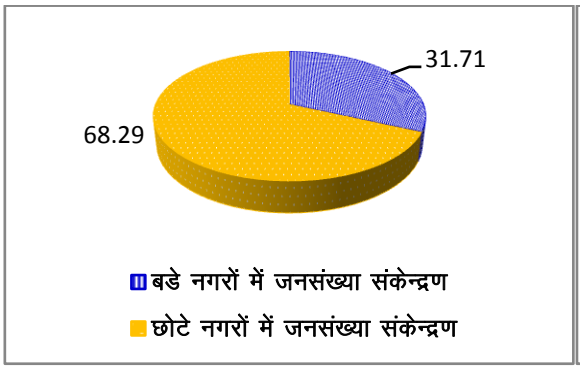

वर्ष 1971

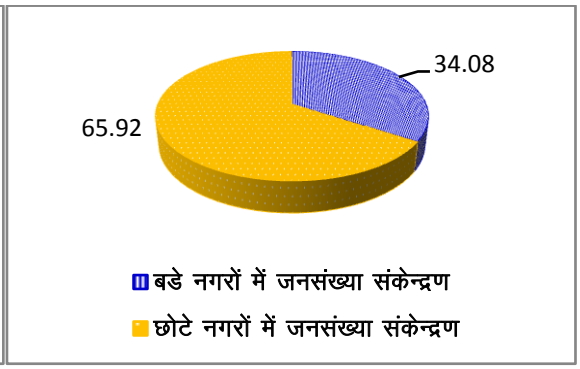

वर्ष 1981

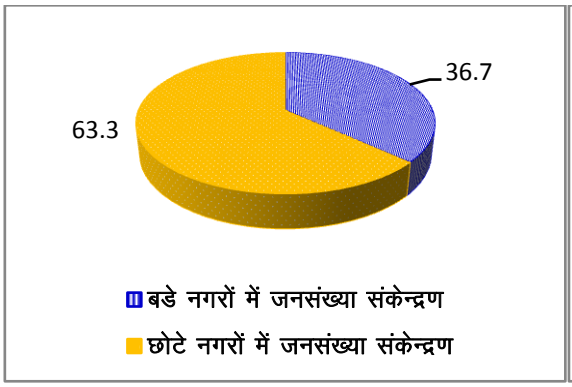

वर्ष 1991

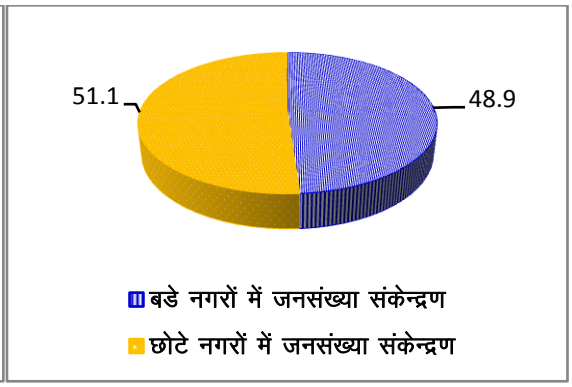

वर्ष 2001

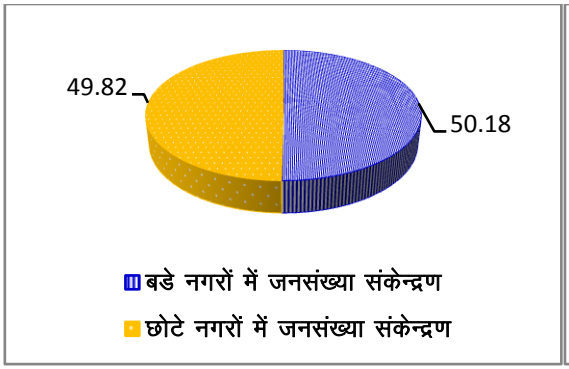

वर्ष 2011

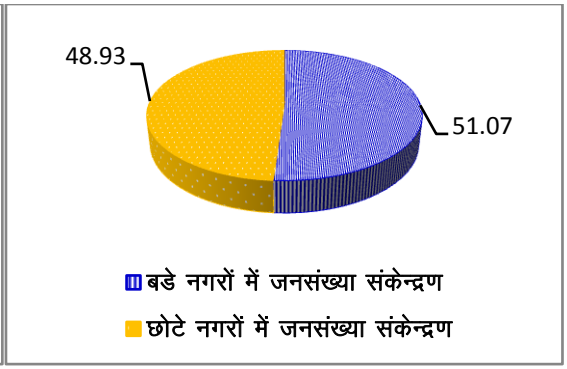

तालिका 1एवं आरेख 1, 2 का विश्लेषण करने से निम्न तथ्य उजागर होते हैं–

(i) अलवर जिले में 1961 में एक भी नगर एक लाख से अधिक जनसंख्या वाला नहीं था। इस वर्ष जिले का सबसे बड़ा नगर अलवर था जिसमें कुल नगरीय जनसंख्या

का 82.72 प्रतिशत निवास करता था। 1971 से 2001 के मध्य अलवर जिले में एक लाख से अधिक जनसंख्या वाला नगर (केवल एक) अलवर ही था परन्तु 2011 में अलवर के अलावा भिवाड़ी नगर की जनसंख्या भी एक लाख से अधिक हो गई।

(ii) उपर्युक्त तालिका के संकेन्द्रण सूचकांक के अवलोकन से पता चलता है कि अलवर जिले में नगरीय जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगर/नगरों में ही निवास करता था। 1961 से 2011 के मध्य प्रत्येक जनगणना वर्ष में अलवर जिले में 60 प्रतिशत से अधिक नगरीय जनसंख्या एक या दो नगरों में सिमटी हुई थी। ये आँकड़ें बतलाते हैं कि जिले में नगरीकरण का संतुलित विकास नहीं हुआ है। छोटे नगरों में जनसंख्या जमाव अभी काफी कम है, इससे यह भी पता चलता है कि उत्पादन एवं सेवाओं का संकेन्द्रण अलवर एवं भिवाड़ी नगरों में ही सर्वाधिक है।

(iii) भरतपुर जिले में नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण सूचकांक 1961 से 2011 के मध्य 31.71 से 51.07 प्रतिशत के मध्य रहा है। इससे पता चलता है कि जिले में यद्यपि बड़े नगर में तुलनात्मक रूप से जनसंख्या का जमाव काफी अधिक है परन्तु यह अलवर जिले जैसा नहीं है। अलवर जिले में 1961 से 2011 के मध्य नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण सूचकांक 61.20 से 82.72 था जिससे पता चलता है कि जिले में बाकी नगर काफी छोटे आकार के है तथा अलवर और भिवाड़ी नगर के उत्पादन एवं सेवा क्षेत्रों ने ही जिले की अधिकांश नगरीय जनसंख्या को अपनी ओर खींच रखा है। अलवर नगर के विकास में प्रशासनिक एवं औद्योगिक दोनों कारक सर्वाधिक जिम्मेदार हैं जबकि भिवाड़ी के विकास में औद्योगिक कारक ही सर्वाधिक प्रभावशाली है। शिक्षा, चिकित्सा सेवाओं का विकास भी अलवर जिले में नगरीय जनसंख्या के संकेन्द्रण में महती भूमिका निभा रहा है।

(iv) अलवर जिले में 1961 से 2001 तक लगातार संकेन्द्रण सूचकांक कम हुआ है, इससे पता चलता है कि नगरीय जनसंख्या में जिले के अन्य नगरों की भागीदारी बढ़ रही है। 2011 में भिवाड़ी एक लाख से अधिक जनसंख्या का नगर जुड़ने से 2001 से 2011 में संकेन्द्रण सूचकांक थोड़ा बढ़ा है।

(v) भरतपुर जिले में बड़ा औद्योगिक क्षेत्र नहीं होने, शिक्षा, चिकित्सा का अधिक विस्तार नहीं होने के कारण नगरीय जनसंख्या का अलवर जिले से अधिक विकेन्द्रण दिखाई देता है। भरतपुर जिले में अन्य छोटे नगरों का विकास भी प्रशासनिक, औद्योगिक, सेवा इत्यादि कारणों से शनैः शनैः हो रहा है।

(vi) भरतपुर जिले में 1961 से 2011 तक प्रत्येक उत्तरवर्ती जनगणना वर्ष में नगरीय जनसंख्या संकेन्द्रण सूचकांक बढ़ रहा है यह जनसंख्या संकेन्द्रण की बढ़ती प्रवृत्ति की ओर इशारा कर रहा है, यदि यह प्रवृत्ति निरन्तर जारी रहे तो क्षेत्र के विकास में असंतुलन ला सकती है।

निष्कर्ष

अलवर जिले में जनसंख्या संकेन्द्रण सूचकांक 1961 से 2011 के मध्य 61.20 प्रतिशत से 87.72 प्रतिशत था जिससे स्पष्ट है कि अलवर जिले में बड़े नगरों में जनसंख्या का अत्यधिक संकेन्द्रण रहा है जबकि भरतपुर जिले में संकेन्द्रण सूचकांक 31. 7 प्रतिशत से 51.07 प्रतिशत था जो बतलाता है कि यहाँ बड़े नगरों में जनसंख्या संकेन्द्रण अलवर जिले की तुलना में काफी कम है। अलवर जिले में एक लाख या अधिक आबादी वाले नगरों के अलावा अन्य नगरों का विकास कम होने के कारण वे नगर अधिक आबादी को अपनी ओर आकृष्ट नहीं कर पाये किन्तु भरतपुर जिले में छोटे नगरों का विकास अलवर जिले के छोटे नगरों की तुलना में अधिक हुआ है। अलवर जिले में अलवर नगर में जनसंख्या के अधिक संकेन्द्रण का मुख्य कारण उसका जिला मुख्यालय होना तथा औद्योगिक नगर होना है। इस जिले के भिवाड़ी नगर के विकास का प्रमुख कारण अधिक औद्योगिक विकास होना है। भरतपुर नगर जिला मुख्यालय, संभाग मुख्यालय होने एवं इस नगर में औद्योगिक इकाइयों की स्थिति के कारण जिले के अन्य नगरों से अधिक विकास कर पाया।

आँकड़ों के विश्लेषण एवं प्राप्त तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिकल्पना "अलवर एवं भरतपुर दोनों जिलों में नगरीय जनसंख्या का संकेन्द्रण बड़े नगरों में बहुत अधिक हुआ है" अलवर जिले के संदर्भ में पूर्णतः सत्य एवं भरतपुर जिले के संदर्भ में आंशिक रूप से सत्य प्रमाणित हुई हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. कुमार, उमेश 2020 : नगर का उद्भव और विकास, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ अपलाइड रिसर्च, 6 (5), 457–459
2. कुमारी, बिनेश 2018 : भरतपुर जिले में अभिवृद्धि केन्द्रों का अन्तरालन एवं कार्यिक वर्गीकरण, शृंखला 2018 पृ. 27–28
3. खान, एम. 1980 : साइज ऑफ अरबन सेण्टर्स इन राजस्थान, ज्योग्राफिकल रिव्यू ऑफ इण्डिया 42(1) : 83–87
4. बंसल, सुरेश चन्द, 2012, भारत का भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृ. 601–605
5. भारत की जनगणना 2011, राजस्थान, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैण्डबुक अलवर सीरीज 09, पार्ट XII-Aपृ. 20–21
6. भारत की जनगणना 2011, राजस्थान, डिस्ट्रिक्ट सेंसस हैण्डबुक भरतपुर सीरीज 09, पार्ट XII-Aपृ. 18
7. यादव, ममता 2023 : झुंझुनु जिले नगरीय केन्द्र : उद्भव, विकास एवं स्थानिक वितरण, अनपब्लिशड पीएच.डी. थिसिस, राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य वि.वि., अलवर पृ. 247–252
8. यादव, ममता एवं यादव, वेदप्रकाश 2021 : नगरीय बस्तियों का कोटि आकार ' झुंझुनु जिले के संदर्भ में, शृंखला, शोध पत्रिका वॉल्यूम 9, अक्टूबर 2021, पृ. H1–5
9. विश्वनाथ, एम.एस. 1972 : "ग्रोथ पैटर्न एण्ड हायरारकी ऑफ अरबन सेण्टर्स इन मैसूर", इण्डियन ज्योग्राफिकल जर्नल, 17:1–11
10. शर्मा, पीआर एण्ड एम. मौर्य 1996 : स्पेसियल एनालिसिस ऑफ स्मॉल टाउन्स एण्ड इट्स इंपलीकेशन्स इन डीसेन्ट्रेलाइज्ड प्लानिंग ट्रांजेकशन्स ऑफ दी इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डियन ज्योग्राफर्स 19 (1) : 65–75